International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 410-412

वैदिक समाज और नारी शिक्षा

डॉ. गुलाबधर द्विवेदी
प्राचार्य, भारतीय विद्या मन्दिर, शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, बांसवाड़ा, राजस्थान, भारत।

प्रस्तावना

वैदिककालीन नारी शिक्षा

आधुनिक समाज में एक भ्रान्ति पैदा हुई है कि पुरातनकाल में नारी शिक्षा के प्रति समाज जागृत नहीं था। पुरातनकाल अर्थात् वैदिक काल जिसे ऋग्वैदिककाल से लेकर उपनिषत्काल तक माना जाता है, इसलिए वैदिक साहित्य में चारों वेद, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद् ग्रन्थों को समाहित किया गया है।

वैदिक काल में ही नारी शिक्षा पर अत्यधिक बल था। नारियों को गृहकार्य की शिक्षा से लेकर सामाजिक कार्य करने तक की शिक्षा दी जाती थी। जो नारी शिक्षा प्राप्त कर लेती थी उनको शिक्षक का कार्य करना पड़ता था साथ ही गृहकार्य भी करना पड़ता था। वैदिक ऋषि स्पष्ट आदेश देता है कि समाज में जो धर्मात्मा, विदुषी एवं पण्डिता स्त्रियां है, वे सभी बालिकाओं को उत्तम एवं श्रेष्ठ शिक्षा दें। जो बालिकायें उनकी स्तुति करें उनको वे ऐसी पूर्ण शिक्षा देवें कि वे श्रेष्ठ कार्य कर सकें। बालिकाओं को विज्ञान की भी शिक्षा दी जाये।[1] केवल शिक्षा प्राप्त विदुषी स्त्रियों को ही नहीं, समाज के पुरोधा वे समाज के लिए आदर्श एवं पूज्य ऋषि समाज को माता–पिता एवं बालिकाओं को भी आदेशित करता है कि ''माता–पिता द्वारा प्रेषित समस्त बालिकाएं विदुषी स्त्रियों से शिक्षा ग्रहण करें और वे विदुषी स्त्रियाँ कन्याओं को सुशिक्षा से सम्पन्न करे।'[2] माँ सरस्वती से यह प्रार्थना है कि माता जो योगज विद्या है और आनन्द प्रदायिनी है वह विद्या हमारी प्रजाओं को प्रदान करें।[3]

समाज का स्वरूप भिन्न–भिन्न होता है। परिवार की परिस्थितियां भी भिन्न–भिन्न होती है। अतः इस भिन्नता आधार पर सम्भव था कि कुछ बालिकायें शिक्षा से वंचित रह जाती है। यह स्वाभाविक ही है जैसा कि वर्तमान में भी देखा जा सकता है। वैदिककालीन समाज नारी शिक्षा के प्रति इतनी जागरूकता एवं लालसा रखता था कि नारियो की शिक्षा के लिए अग्नि (गुरू) से प्रार्थना करता है कि 'हे अग्नि देव ! हमारी कन्याओं, पत्नियों और सभी स्त्रियों को अच्छी शिक्षा देकर विदुषी बना दें।'[4]

शिक्षक के पद पर चाहे पुरूष हो या नारी उनका सम्मान सदा ही समाज के द्वारा व शिष्यों के द्वारा होता रहा है अर्थात् गुरू–शिष्य सम्बन्ध पिता–पुत्र, माता–पुत्री की तरह हमेशा रहा है। गुरू की आज्ञा का पालन, अनुशासन में रहकर मर्यादा एवं विवेक की सीमा रेखा को समझना व उस पर कायम रहना यही भारतीय शिक्षा का आदर्श रहा है और इस पथ पर दृढ़ रहने वाला ही गुरू द्वारा दिये गये ज्ञान को पूर्णतः अधीत कर पाता है। ऐसे ही आदर्श को स्थापित करती हुई वैदिक ऋचा कहती है कि 'जो स्त्री पढ़ाने वाली हो, विदुषी हो, कुमारी हो, तीक्ष्ण बुद्धि वाली हो तो उसकी आज्ञा कन्याओं (पढ़ने वाली लड़कियाँ) को मानना चाहिए तथा उनके अनुकूल व्यवहार करना चाहिए। इसी में आगे ऋषि गृहकार्य के प्रति भी सावचेत करते हुए ऋषि कहाता है कि घर की क्रियाओं में तथा पाक विद्या में जो पंडिताइने (कुशल नारी) है उनसे भी बालिकाओं को शिक्षा प्रदत्त करानी चाहिये।'[5]

उक्त शिक्षा की बात जो ऋषि कहते हैं वह आज के समाज में इतनी सटीक बैठती है कि अमीर एवं सम्पन्न परिवार के लोग, जहाँ प्रत्येक कार्य के लिए नौकर लगें है, जैसे कपड़ा धोना, झाड़ू लगाना, खाना बनाने वाली, कोई नौकरानी आदि ऐसे घर की लड़कियाँ ये सब कार्य नही कर पाती है वे केवल विद्यालय, महाविद्यालयों से उच्च शिक्षा तो प्राप्त कर लेती हैं। लेकिन विवाह के उपरान्त गृहकार्य के विषय में उपहास की पात्र बनती है और इससे अन्ततः स्थिति भयावह हो जाती है। अतः लड़कियों को शिक्षा के साथ–साथ गृहकार्य करने की शिक्षा या आदत डालनी चाहिए जो माता–पिता का स्वाभाविक कर्तव्य है।

''वैदिक कालीन समाज में पुत्र और पुत्री दोनों को द्विजत्व प्रदान किया जाता था अर्थात् यज्ञोपवीत/उपनयन संस्कार पश्चात् गुरूकुल में अध्ययनार्थ भेजा जाता था। अध्यापक व अध्यापिका जिनके पास विद्या व तेज है उनसे माता–पिता यह निवेदन करते थे कि हमारी सन्तान को ऐसा बना दें कि उनके द्वारा प्राप्त विद्या से वह अपनी व अपने समाज की रक्षा कर प्रेरणा दे सकें। स्त्री–पुरूषों से यह अपेक्षा की जाती थी कि वे अच्छे पुत्र व पुत्रियाँ दें।''[6]

वैदिककाल में राजतन्त्र प्रणाली थी और राजा राज्य का सर्वप्रमुख होता था। उसी के अधीन राज्य के सम्पूर्ण कार्य व व्यवहार सम्पादित होते थे। उसकी आज्ञा सर्वोपरि होती थी। यद्यपि यह बात सत्य है कि वह समिति व सभा के निर्णयों पर विचार करता था। ब्राह्मण या ऋषि उनके मंत्री, गुरू होते थे। अतः परोक्ष रूप से ब्राह्मण या ऋषि की आज्ञा का पालन सामान्यतः किया जाता था। राजा के कर्तव्यों की ओर ध्यान दिलाते हुए ऋषि कहता है कि ''राज्य की स्त्रियों को विद्वान बनाने हेतु परिवार के अलावा राजाओं का भी कर्तव्य है। राजा को चाहिये कि इन बालिकाओं को ऐसी धाइयों को सौंपे जो विद्या सम्पन्न हो। जिससे कोई अशिक्षित न रहे।''[7] यदि मनुष्य को सुख प्राप्त करना है और दुःख से निवृत्त होना है तो जीवन में विदुषी माता, विद्वान गुरू तथा पदार्थ विज्ञान का ज्ञान आवश्यक है।[8]

समाज में प्रायः लोग किये गये उपकार को भूल जाते है। वैदिक साहित्य में इसको ऋण कहा गया है। इसी का स्मरण कराते हुए कन्या को कहा गया है कि तुझमें जो शिक्षा की चेतना जगी है यह तुझे शिक्षा देने वाली विदुषी महिला के कारण जगी है। उसका साथ कभी मत छोड़ना।[9] शिक्षिका के कर्तव्यों का स्मरण कराते हुए ऋषि कहता है कि उसे अपने विद्यार्थियों को धर्मयुक्त शिक्षा देनी चाहिए। जिससे विद्यार्थी दुर्व्यसनों की ओर न जाएं और चिन्तारहित होकर आनन्दपूर्ण जीवन बिता सके। ऐसी शिक्षा प्रदान करनी है।[10]

शिक्षा, अशिक्षा एवं कुशिक्षा प्रायः समाज में 3 प्रकार की यही शिक्षा

पायी जाती है। शिक्षा का तात्पर्य व्यक्ति समाज एवं राष्ट्र को एकता अखण्डता, स्नेह, प्यार, न्याय के साथ वैश्विक स्तर बन्धुत्व की भावना का विकास करते हुए ज्ञान प्राप्त करे तथा वैज्ञानिक ज्ञान का सदुपयोग करे।

शिक्षा, प्रायः राष्ट्रभाषा का सम्मान करते हुए सम्यक ढंग से लिखना, पढ़ना, बोलना और सुनना भी सिखाती है। इसलिए वैदिक शिक्षा में वाणी का अत्यधिक महत्व दिया गया है। पढ़ने वालों अर्थात् शिक्षित व्यक्ति की वाणी उनके गुणों को प्रकाशित करने वाली है। अतः वह सत शुद्ध और प्रशंसनीय एवं मीठी होनी चाहिए।[11] ऋग्वैदिक ऋषि यह कामना करते थे कि हमें ऐसी स्त्रियां प्राप्त हो जो माता के सदृश पालन करें। सौभाग्य से युक्त हो तथा सदुपदेश देने वाली हो। जिस प्रकार नदियां खेतों को सींचती है वैसे ही स्त्रियां जीवन को सिंचित करें। जैसे गाय बछड़े को पोषित करती है वैसे ही माता रूप में हमें विद्या और शिक्षा से पोषित करे।[12]

कन्या अपने गुरू से निवेदन करती है कि हे आचार्य मैं ब्रह्मचारिणी हूं। मैं आपकी वन्दना करती हूं। जिस प्रकार माता–पिता पुत्र शिक्षा देते है आप मुझे वैसी ही शिक्षा दें, मैं ज्ञान शून्य हूं अतः आप शिक्षा देकर मेरा कल्याण करें। इससे शिष्य का गुरू के प्रति नम्रता एवं आदर भाव तथा श्रृद्धाभाव प्रकट होता है। अतः गीता का यह श्लोक – श्रद्धावान् लभते ज्ञानम्।' पूर्णतः सार्थक प्रतीत होता है।

अतः उक्त तथ्यों से निम्न निष्कर्ष निकलते है –

1. वैदिककाल में शिक्षा में शिक्षा के क्षेत्र में बालक–बालिका को समान महत्व दिया जाता था।
2. विदुषी एवं शिक्षित स्त्रियाँ समाज में शिक्षिका की भूमिका अदा करती थी।
3. समाज में यह नहीं देखा जाता था कि कोई विवाहित है या अविवाहित। आदर सम्मान केवल शिक्षा का था।
4. विदुषी स्त्रियां केवल परिवार के सदस्यों को ही नहीं बल्कि समाज के समस्त बालक–बालिकाओं को शिक्षित करती थी।
5. नारी शिक्षा का इतना महत्व था कि शिक्षित नारी अपने पति को भी शिक्षित करती थी।

वैदिककालीन विदुषी नारियां – एक प्रतिबिम्ब

ऋग्वेद का चारों वेदों में सर्वाधिक महत्व है। ऋग्वेद के अधिकांश मन्त्र अन्य तीनों वेदों (यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद) में उसी रूप में या आंशिक परिवर्तन के साथ समभावी या समानार्थी रूप में मिलते हैं। ऋग्वेद के अध्ययन से मालूम पड़ता है कि स्त्रियां वेदाध्ययन करती थी। कवितायें बनाती थी एवं मन्त्रों का आविष्कार एवं रचना भी करती थी, कुछ विदुषी नारियाँ निम्न है –

विदुषी घोषा – ज्ञान प्राप्ति हेतु स्वयं का अज्ञानी समझना ही सफलता का मंत्र है। अगर कोई अल्पज्ञ या अज्ञ अपने बहुज्ञ या सर्वज्ञ समझने लगे तो वह कमी भी ज्ञान प्राप्त नहीं कर पाता। इसी विचारधारा एवं श्रेष्ठता को अपने हृदय में उतारकर वैदिककालीन विदुषी घोषा ने ऋग्वेद के 10 मण्डल के 39 से 40 वें सूक्त की सृष्टि की और अपने को अनाथ असहाय और अज्ञानी समझते हुए गुरू से ज्ञान की भिक्षा मांगती है। हे गुरूवर (अश्विनद्वय) जैसे पिता पुत्र को शिक्षा देता है वैसे ही मुझे भी शिक्षा दो। मेरा कोई यथार्थ बन्धु नहीं है। मैं ज्ञानशून्य हूं। मेरा कुटुम्ब नहीं हैं, बुद्धि भी नही है। मैं जीवन में किसी भी संकव से घिरूं उससे पूर्व ही उसे दूर करो।[13] तत्कालीन समाज नारी शिक्षा प्रचलित थी। स्त्रियाँ रथ भी बनाती थी। यज्ञकार्य में भी नियुक्त होती थी और पुत्र–पौत्रों को समाज में प्रतिष्ठित भी करती थी।[14]

विदुषी लोपामुद्रा – महर्षि अगस्त्य की पत्नी लोपामुद्रा द्वारा एक सूक्त सृजित किया गया था। इससे कामशास्त्र के विषय अल्पन्त उच्च कोटि की बाते भी है।[15]

विदुषी अपाला – महर्षि अत्रि की पुत्री अपाला ने देवराज इन्द्र की स्तुति की है और एक सम्पूर्ण सूक्त की रचना की।[16]

विदुषी रोमशा (लोमशा) – विदुषी लोमशा इन्द्र की स्तुति में 2 मंत्रों की रचना की है।[17]

विदुषी विश्वावारा – अग्नि की स्तुति अत्यन्त ही रोचक एवं विनम्रता के साथ किया है। यह स्तुति ऋग्वेद के पंचम मण्डल के 28 वे सूक्त में है।

ऋषिका सूर्या – ऋषिका सूर्या ने दशम मण्डल के 85 वें सूक्त की रचना करके अनेक वैज्ञानिक तथ्यों को स्पष्ट किया है। रथ के निर्माण मे पलाश और शाल्मली के वृक्षों की उपयोगिता की श्रेष्ठता [18] नारी को पति के वश में रहकर घर के नौकर पर सेवकों पर शासन या उचित आदेश निर्देश देना। स्त्री वृद्धावस्था तक पतिगृह का स्वामित्व करने वाली आदि बातों का उल्लेख है।[19]

देवी इन्द्राणी – देवी इन्द्राणी ने ऋग्वेद 10वें मण्डल के 86 वें सूक्त के अनेक मंत्रो की अधिष्ठात्री है। जैसे – 2, 4, 7, 9, 10, 15, 18, 22, 23।

ब्रह्मवादिनी जूहू – ब्रह्मवादिनी जूहू ने तपस्या और सच्चरित्रता को सर्वश्रेष्ठ बताया है। इससे निकृष्ट पदार्थ भी उत्तम एवं श्रेष्ठ स्थान पर स्थापित हो सकता है। इन्होनें ऋग्वेद के 10वें मण्डल के 109वें सूक्त की रचना की है।

इसी प्रकार विवस्वान की पुत्री यमी द्वारा 10–154वें सूक्त कामगोत्रीय विदुषी श्रद्धा द्वारा 10–151वें सूक्त, सर्वराज्ञी 10–189वें सूक्त ऋषि दीर्घतमा की माता विदुषी ममता द्वारा 10–15वें सूक्त के 2, 5, 7, 9, 11, 13, 15, 16वें मंत्रों की दृष्टा, ऋषिका वाग्देवी ने 10वें मण्डल 125वां सूक्त सृजित किया गया है।[20]

संक्षेप में सारतः स्पष्ट यह है कि वैदिककालीन नारियों के द्वारा मंत्रों की रचना करना केवल शिक्षित होने का ही प्रमाण नहीं देता बल्कि शिक्षा और विद्या के क्षेत्र में उच्च कोटि का वैदुष्य या विदुषी होने के भी प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। ऋषि कन्यायें आश्रम में स्वतः ही पिता के पास शिक्षित होकर नारियों को शिक्षित करती थी और नारियां समाज में परिवार में प्रतिस्थापित होकर आवश्यकतानुसार परिवार को, समाज में लड़कियों को व नारियों को शिक्षित करती थी।

संदर्भ सूचीं

1. नूनं सते प्रतिवरं.....विदये सुवीरा।। ऋग्वेद् 2–17–26
2. अम्बितमें नदीतमें.....नस्कृधि।। ऋग्वेद 2–41–16
3. त्वे विश्वा सरस्वती.....दिदिडिढ नः।। ऋग्वेद 2–41–17
4. अग्ने.....सामपीतये।। यजुर्वेद 19–12
5. नार्य्यस्ते.....शम्यन्तुत्वा।। यजुर्वेद 23–36
6. हिरण्य हस्तमश्विना.....ऐरयतं सुदान।। यजुर्वेद 1–118–24
7. सधमादो द्युम्निनोराप.....तमास्वन्तः।। यजुर्वेद 10–7
8. अविर्मथ्याऽअविचोऽअग्निर्ग..... विश्वशम्भुवावावित्तादितिरूरूशर्म्म।। यजु. 10–9

9. चिदीप ..... ध्रुवासिदम्।। यजुर्वेद 12–53
10. लोके प्रण ..... सीदसम्।। यजुर्वेद 12–54
11. य वां कशा ..... मिमिक्षितम्।। ऋग्वेद 1–22–3
12. अच्छा सिन्धु ..... मनुसंचरन्ती।। ऋग्वेद 3–33–3
13. ऋग्वेद 10–39–6
14. ऋग्वेद 10–39–7, 10–40–10 वैदिक साहित्य, पं. रामगोविन्द त्रिवेदी, भारतीय ज्ञानपीठ काशी–1950
15. ऋग्वेद 1–179 सूक्त
16. ऋग्वेद 8–90 सूक्त
17. ऋग्वेद 1–126, 6–7 वां मंत्र
18. वैदिक साहित्य, पं. रामगोविन्द त्रिवेदी, वाराणसी 1950 पृ. 74
19. ऋग्वेद 10–85–26
20. वैदिक साहित्य, पं. रामगोविन्द त्रिवेदी,